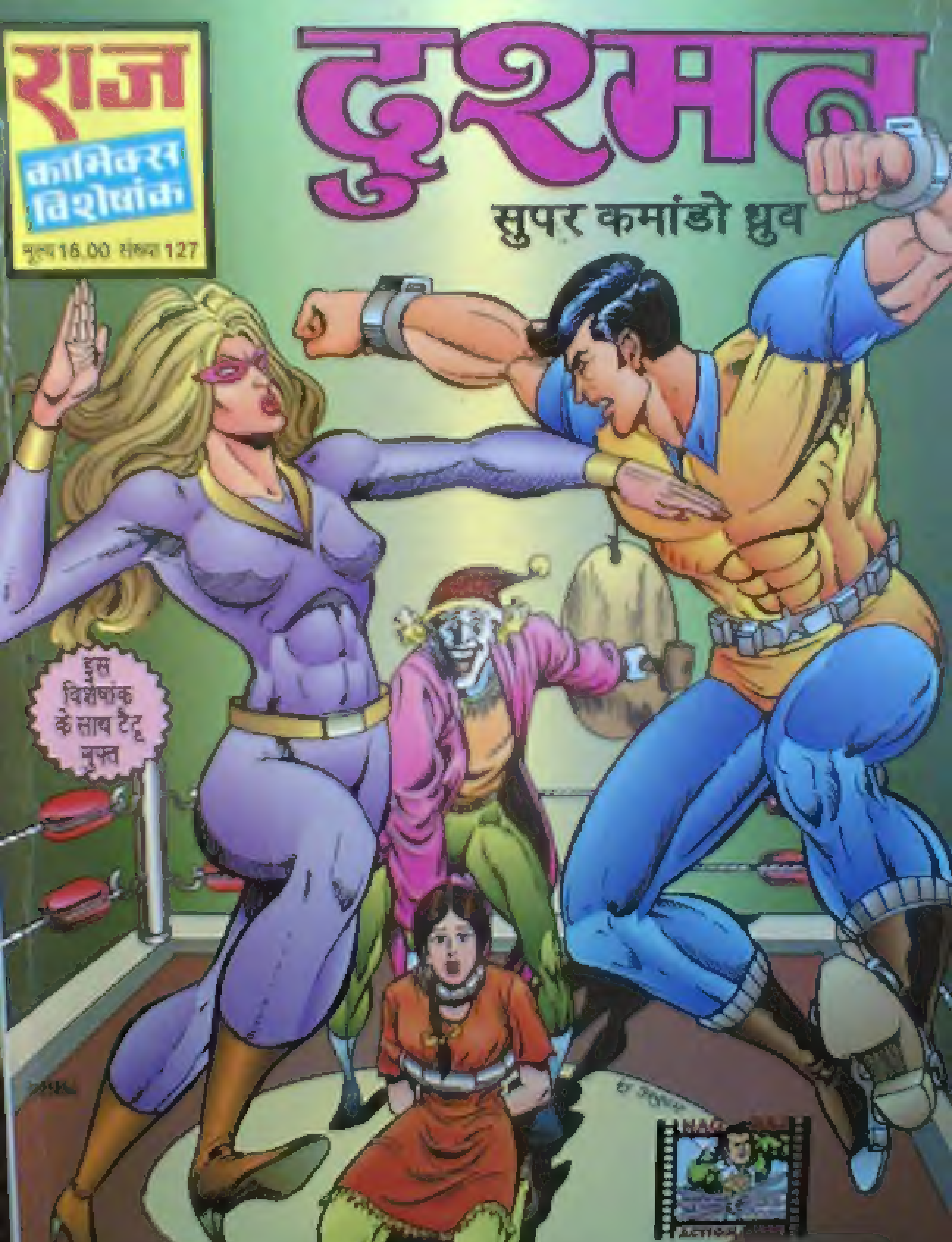
राज
कॉमिक्स विशेषांक
मूल्य 16.00 संख्या 127
दुश्मन
सुपर कमांडो ध्रुव
इस विशेषांक के साथ टैटू मुफ्त

Vinod Yadav

दुश्मन

कथा: जॉली सिन्हा
चित्र: अनुपम सिन्हा
इंकिंग: विट्ठल कांबले
सुलेख व रंग: सुनील पाण्डेय
सम्पादक: मनीष गुप्ता

राजनगर के एक छोर पर, आबादी से दूर स्थित यह मानसिक चिकित्सालय, एक हाई सिक्योरिटी ज़ोन में आता है-
जबसे आपको राजनगर के इस मेंटल हॉस्पिटल में शिफ्ट किया गया है, बॉस...
...तबसे हमने भी राजनगर को ही अपना अड्डा बना लिया है! पर यहां का माफिया हमको टिकने नहीं दे रहा है। पिछले हफ्ते हमारे दो आदमी भी मारे जा चुके हैं!
क्योंकि इस चिकित्सालय में उन मानसिक रोगों से ग्रस्त कैदियों को रखा जाता है, जिन पर जघन्य हत्याओं का आरोप लगा होता है-
और कानून इनको चाहकर भी कोई सज़ा नहीं दे सकता है-
हुंह! जो इस शहर को लूट चुके हैं, वे हमको इसे लूटने से रोक रहे हैं? ही ही ही! वैसे भी मैं यहां रहते-रहते बोर हो गया हूं! अब बाहर निकलकर इस शहर को बताना ही पड़ेगा कि...
...कि विदूषक का प्रोग्राम जहां पर चलता है वहां पर दूसरों के शो फ्लॉप हो जाते हैं!
बस! मुलाकात का समय खत्म हो गया! अब चलो, आज दोपहर में तुम्हारा चेकअप भी है!
ही ही ही ही ही ही!
मेरा चेकअप! मैं कोई पागल हूं क्या?
तू पागल कहां है? तू तो दूसरों को पागल बनाने वाली मशीन है!
अब चल!

शहर में बढ़ रही अपराधों की वारदातों से कमिश्नर राजन और सुपर कमांडो ध्रुव भी परेशान थे–
दो दिन पहले गोलीबारी की घटना में इन दोनों की मौत हो गई! हमारी जांच के अनुसार ये दो माफिया गुटों के बीच हुई गोलीबारी में मारे गए हैं!... ये उनमें से किसी एक गुट से संबंध रखने वाले थे!
इन दोनों को ही मैंने पहले कभी नहीं देखा!
किस गुट से थे ये दोनों?
इनकी शिनाख्त करने में पुलिस को पूरे दो दिन लगे हैं! दरअसल ये राजनगर के गुंडे नहीं हैं! कहीं बाहर से आए हैं! और यही बात सारे फसाद की जड़ लग रही है।
मैं समझ गया! यानी कि राजनगर में बाहर से कोई गिरोह आ गया है। और यहां के गिरोह उसको टिकने देना नहीं चाहते हैं। यही तो मैं सोचूं कि मेरी इतनी कोशिश के बावजूद भी अपराध की वारदातें बढ़ क्यों रही हैं!
मैंने तुमको इसी नई स्थिति को बताने के लिए पुलिस हेड-क्वार्टर बुलाया था...
...ताकि पुलिस फोर्स के साथ साथ तुम भी इन गुंडों से निपटने के लिए कमर कस लो!
मैं आज ही शहर के सारे पशु और पक्षियों से हर जगह नजर रखने के लिए कह देता हूं, ताकि किसी भी वारदात की खबर मुझ तक तुरंत पहुंच जाए।
मैं इन कीड़ों को राजनगर में तो क्या, कहीं पर भी नहीं पनपने दूंगा पापा!

राजनगर में आज इस कुचाल को लाने वाले ही इस कुचाल से बचने की कोशिश कर रहे थे-
तुम्हारे इस तरह असफल होने का क्या कारण है, हारून शाह? तुम एक मामूली गिरोह को काबू में नहीं कर पा रहे हो! अब तक हम राजनगर में शांति से अपने धंधे चलाते आ रहे हैं! इस खून-खराबे से हम पुलिस और ध्रुव की नजर में आ जाएंगे! और फिर तुम जानते ही हो कि क्या होगा? हम ध्रुव से टकराना नहीं चाहते!...
मैं तुमको यह मसला सुलझाने के लिए एक मौका और देती हूं! उसके बाद इस मसले से सीधे हम निपटेंगे!
थैंक... थैंक्यू मैडम नताशा! थैंक यू... इस मसले को तो मैं बहुत पहले निपटा लेता, पर यह पता नहीं चल पा रहा है कि इस गैंग का लीडर कौन है?
अभी हम इस गिरोह के आदमियों को मारकर इस पेड़ की सिर्फ डालें तोड़ रहे हैं। एक बार इसके मुखिया का पता चल जाए तो उसको मारकर हम पेड़ को जड़ से ही काट सकते हैं! म...मैं जल्दी ही उस जड़ का पता लगा लूंगा!
अगर पता लगाकर उसे खत्म कर दोगे तो अपनी जिन्दगी को बढ़ा लोगे हारून...
...अब जाओ! तुम्हारे पास सिर्फ दो दिनों का वक्त है!
ओ थैंक्यू! थैंक्यू मैडम!

क्योंकि वह मुजरिम अब छिप-कर रहने का इरादा छोड़ चुका था-
डॉक्टर चड्ढा! आ गया आपका मरीज!
मरीज नंबर वन बोलो गॉर्ड! मैं डॉक्टर साहब का चहेता मरीज हूं न! इसीलिए तो इन्होंने मुझे यहां बुला लिया है, अपने पास! है न डॉक्टर साहब?
हूम! शट अप!
इसको बिजली के झटके देने पड़ेंगे गॉर्ड! पता नहीं कानून ऐसे पागल कातिलों को जिन्दा क्यों छोड़ देता है?
ये अपराध करने के लिए जिन्दा रहते हैं और इलाज हम को करना पड़ता है!
इसको बेड पर बांध दो!
गॉर्ड, बूढ़े विदूषक को लेकर जैसे ही आगे बढ़ा-
विदूषक चौंक उठा-
अरे! गॉर्ड साहब! ये देखो! नीचे क्या हो रहा है?
क्या हो रहा है?
कहां कुछ हो रहा है? मुझे तो कुछ नहीं दिख रहा!
देखो! नीचे देखो!...
...और देखते रहो! देखते रहो! देखते रहो!
गर्दन खिड़की के बीच में दबते ही गॉर्ड की सांस की नली दब चुकी थी।
आऽऽऽ अक्!

विदूषक की यह हरकत देखते ही डॉक्टर चड्ढा तेजी से दरवाजे की तरफ लपके-
लेकिन उनको बीच में ही रुक जाना पड़ा-
विदूषक गार्ड के होलस्टर से पिस्तौल निकाल चुका था-
न न न! भागना मत डॉक्टर साहब! नहीं तो मेरा निशाना चूक जाएगा! भागना मत!
कुछ ही पलों में विदूषक अपने आपको हथकड़ी से आजाद करा चुका था-
कोशिश मत करना विदूषक.
ये हाई सिक्योरिटी अस्पताल है! तुम... तुम यहां से कभी भाग नहीं पाओगे!
मैं भागूंगा ही नहीं! ही ही ही ही! धीरे-धीरे चलकर जाऊंगा! ...
...हुंह! अब मैं क्या करूं? क्या करूं? हां हां! ये इंजेक्शन! इसे अगर तुझे लगा दूं तो?
न-- नहीं, नहीं! इसे अगर ठीक ठाक इंसान को लगा दिया जाए तो वह पागल हो सकता है!
तो तू इसे मुझे क्यों लगाने आ रहा था?
मुझे पागल करना चाहता था क्या?
अच्छा, देखते हैं कि तू सच बोल रहा है या झूठ! इंजेक्शन लगाकर देखते हैं!
आऽऽऽह! नहीं!
हां! तू सच कह रहा था। मुझे लग रहा है कि तू थोड़ा-थोड़ा पागल होता जा रहा है... अब मैं तेरा क्या करूं? अहा! ये रुई! और ये टेप! समझ गया!
सबसे पहले ये उस्तरा चलेगा!
उस्तरा! उस्तरा!

और फिर थोड़ी देर बाद जब विदूषक खिड़की से बाहर कूदा तो सतर्क गार्डों की आँखों से बच नहीं पाया-
रफीक! उधर देख! डॉक्टर चड्ढा के क्लिनिक की खिड़की से कौन बाहर कूद रहा है?
यह तो विदूषक लग रहा है! और... और ये भागने की कोशिश कर रहा है!
रुक जाओ, विदूषक! वरना हम कुत्ते छोड़ देंगे!
छोड़ दो! मैं छूट गया! उनको भी छोड़ दो!
विदूषक, चेतावनी सुनकर भी नहीं रुका-
और कुत्ते उसके पीछे लपक पड़े-
चारदीवारी के पास पहुंचते-पहुंचते कुत्तों ने भागते विदूषक को धर दबोचा-
और गार्डों के पहुंचने तक उसको झंझोड़कर उसका बुरा हाल कर दिया-
हटो, हटो कहीं यह मर न जाए!

देखो, रफीक! ये जिन्दा है... या मर गया?
पलटकर देखो इसे!
रफीक ने बालों को जैसे ही हाथ लगाया वह चौंक उठा-
जिन्दा है, पर...
इसके बाल तो... बाल नहीं हैं! रूई है!
रूई से बने नकली बाल! यानी ये विदूषक नहीं है! फिर कौन है ये?
अभी पता चल जाता है!
रफीक ने औंधे पड़े उस व्यक्ति को पलटा-
और दोनों चौंक उठे-
ये तो डॉक्टर चड्ढा हैं! किसी ने उस्तरे से इनके बाल साफ करके उस पर रूई के बाल लगा दिए हैं। विदूषक जैसे!
ओह! पर... पर ये विदूषक के भेष में क्यों भाग रहे थे? हमारी चेतावनी सुनकर भी रुके क्यों नहीं...
...यह जरूर विदूषक का ही किया धरा है!
चेक करो कि वह अपने सेल में है या नहीं! और अगर नहीं हो तो खतरे का अलार्म बजा दो!
विदूषक के तो अपने सेल में होने का सवाल ही नहीं था। कुछ ही देर में पूरे अस्पताल परिसर में सायरन की आवाज गूंज रही थी। मेन गेट पर भी-
ये सायरन! कोई पागल सेल से भाग गया है क्या?
ओह! पता नहीं ये पागल भागने की कोशिश क्यों करते हैं!

तुम कहाँ जा रहे हो?
चीफ मेडिकल ऑफीसर की बीवी ने कुछ सब्जी मंगाई है! वही खरीदकर देने जा रहा हूं!
जा भई जा! बहुत जरूरी काम है!
पर ये गॉर्ड था कौन? शक्ल तो जानी-पहचानी लग रही थी...
...पर नाम याद नहीं आ रहा है!
VOLVO VAN
खैर, जाने दो, याद आ जाएगा!
विदूषक आजाद हो चुका था-
याद है, याद है! ओ॰के॰ बॉय श्वेता!
बॉय, श्वेता! याद रखना! शाम को पांच बजे!
?
हो ऽऽऽ कोई न रोको दिल की उड़ान को ऽऽऽ दिल वो चला...
श्वेता!
ओ भइया ऽऽऽ आज तुम घर पर ही हो? नो वर्क आज?
वह लड़का कौन था, जो तुम्हें छोड़ने आया था?

हैं?
मैं जानती हूं भइया अब मैं बच्ची नहीं रही कि मुझमें भले बुरे की पहचान न हो! अनिल बहुत अच्छा लड़का है।
यह तो उसकी शक्ल से ही लगता है! मुझे वह लड़का अच्छा नहीं लगा श्वेता!
यही समझ पर आया! अब मैं तुमसे नहीं पूछूंगी कि तुम कहां जा रहे हो! किसके साथ जा रहे हो!

भाग निकला है। अगर वह
गया था।...

पुलिस अब आती ही होगी.
क्या हो गया है इन्हें ?

ही ही ही ही!
क्या मतलब था विदूषक का इस बात का?
उह!

वह किसी चीज की आड़ ले
लेकिन इससे पहले कि वह पूरी तरह से सुरक्षित हो पाता

मोटरसाइकल
रही है
?
अरे.

आ जाना! फिर मिलेंगे
मैं आबादी वाले इलाके में पहुंच चुका हूं। यहां पर

में काफी वक्त लगेगा,
और इतनी देर में विदूषक
यह तेजी से बनती है, और सुपर
यह तो मैंने भी चेक करके देख लिया कि यह सच बोल रहा है!
इस गुब्बारे को

अब बस, एक सिगरेट पी लूं, वरना अस्पताल में तो वह भी नहीं मिलेगी

हीं हीं हीं! अरे,
आ रहे हैं।

हमारे आदमियों को जिस गैंग ने मारा था, उसका पता चल गया है बॉस!
वैसे तो इस वक्त वह इस शहर का सबसे बड़ा डॉन है।

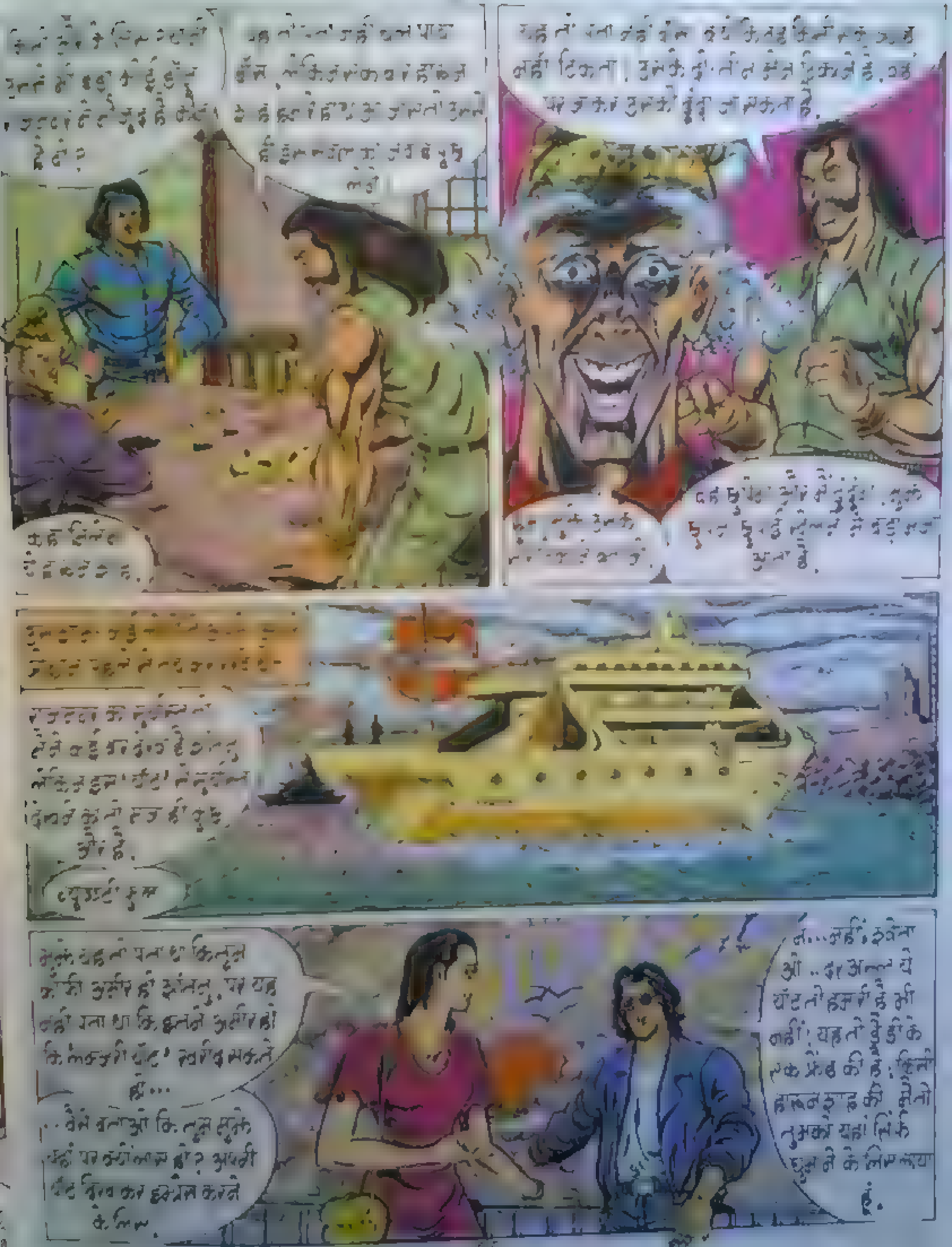

चारों तरफ हथियारबंद
को किसी से खतरा है?
हां, डैडी! हम
पहले ही
इसलिए आपको

अन्दर तक कैसे आ गए?
कमाल है! तू मुझे नहीं पहचानता?
टी० वी० देखता है।
फोटो तो दिखा रहे हैं!

और पंडित बनने के लिए मुझे इस दरवाजे से चुपचाप निकलना होगा।

यहां पर मुझे चंडिका बनते कोई नहीं देख पायेगा!

आह,

नहीं हो रही है?
यॉट से बचकर भाग निकले थे-

आऽऽह

गया है! यह

मैं चंडिका की खबर लेता

अह!
का पता लगा रहा है।
जोर से पड़ रहे हैं.

...क्योंकि भइया
चंडिका के वहां से जाते ही–
पर वह चंडिका कहां गई?
आहा!

हो गया! अब तेरी

इस वक्त वह बेहोश पड़ी!

ध्रुव, तुमने मुझे खबर क्यों भेजी थी? क्या हो रहा था वहां पर?
ओह... और अंकल को क्या हुआ है?

चिल्लाने से क्या होगा ध्रुव?
अब तो तुम्हारी आंखों के सामने खड़ा है.

थैंक गॉड, और
जांच हुई या नहीं ?

इन्तजार करना ही होगा।
'हम' नहीं सिर्फ 'मैं' जाऊंगा
चंडिका. तुम मेरे साथ नहीं जाओगी.
विदूषक के पास अकेले
जाने नहीं दूंगी.

इतनी जल्दी क्या है, विदूषक; पहले मुझे इंद्रा के शरीर पर कसे बमों को निष्क्रिय करने का तरीका बताओ.
उसके बदले में एक पैसा तुमको नहीं दूंगा.

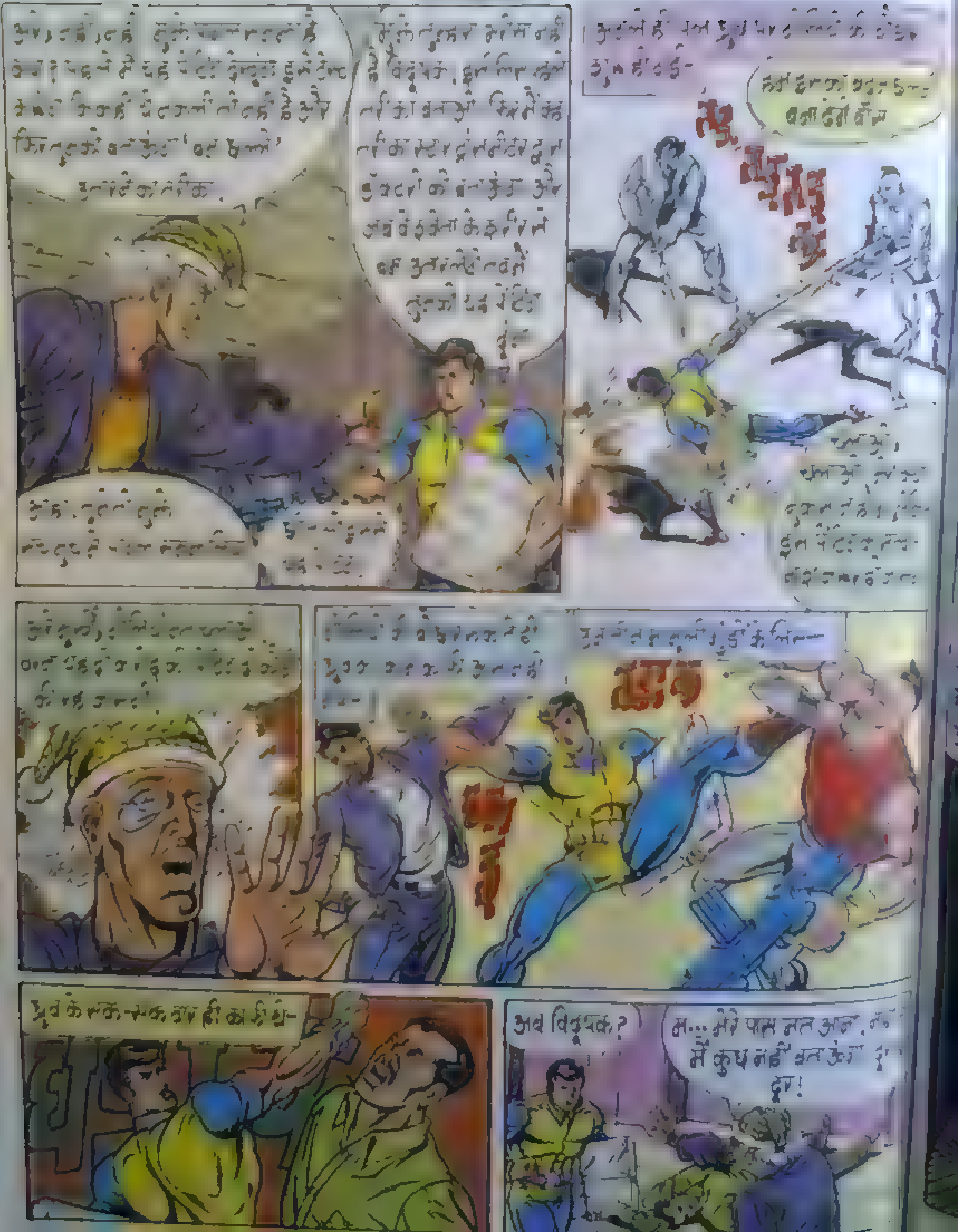

अब विदूषक?

और पेंटिंग, विदूषक के हाथ में रह गई-

... मैं वहां तक
तो सकता हूं, पर उसे अटकाने के
लिए कोई जगह नहीं है!

करवाया इस पेंटिंग ने! अब
क्या करेगा पेंटिंग को खोलकर विदूषक?

...उस छेद तक पहुंच सकूं जहां से मैं नीचे गिरा था,

ध्रुव आजाद हो चुका था-
अरे! य... यह क्या? तुझ पर मेरी 'लॅफिंग गैस' का असर नहीं हुआ?
मैं जानती थी कि तू इस गैस का उपयोग जरूर करेगा विदूषक!
इसीलिए मैं पहले से ही नाक में फिल्टर पहनकर आई थी!
आऽऽह! धोखा! और वह ध्रुव भी बच गया! अब मैं मारा गया! हंड्रेड परसेंट मारा गया!
नहीं विदूषक! अब तुम बच गए!
क्योंकि मैं चंडिका को तुम्हें पीटने नहीं दूंगा!
आऽऽह! यह क्या कर रहे हो, ध्रुव? अब विदूषक हमारे चंगुल में है। फिर भी तुम इसे बचने का मौका देना चाहते हो?
तड़ाक
बचने का नहीं, बल्कि पेंटिंग देखने का मौका देना चाहता हूं चंडिका! मैंने इससे वादा किया था!
और ध्रुव अपना वादा कभी नहीं तोड़ता!
ऐसा है तो अब मुझे ही तुमको रोकना पड़ेगा ध्रुव!
ध्रुव और चंडिका आपस में उलझ पड़े-
और विदूषक को पेंटिंग उठाने का मौका मिल गया-

आहा! यह तो वही पेंटिंग है! और एकदम असली है। वाह वा! अब जब तक ये दोनों आपस में ही झगड़ रहे हैं, मैं आराम से यहां से निकल...
... आऽऽऽह! य... यह मुझे क्या हो रहा है? मेरे बदन में एकाएक तेज जलन क्यों हो रही है?
बस, बस चंडिका! टाइम आउट! मेरा काम हो गया!
मैं चाहता था कि विदूषक ये पेंटिंग पकड़कर देख ले और वह इसने देख लिया।
मैं कुछ समझी नहीं!
आऽऽऽऽऽह!
अभी समझ जाओगी! आओ!
मैं जब तुमसे पेंटिंग छीनकर भागा था, तो बीच में थोड़ी देर के लिए मैं कमांडो हैडक्वार्टर में रुका था! वहां पर मैंने फ्रेम पर एक तेज जहर का पेंट कर दिया था!
और विदूषक के हाथों के रोम छिद्रों से होता हुआ वह जहर अब इसके शरीर में पहुंच चुका है!
समझ गई!
हाय! तब तो मैं मर गया! अब मैं नहीं बचूंगा! सुनो, मेरे मरने के बाद...
अभी नहीं! आधे घंटे में मरोगे विदूषक! वैसे मेरे पास इस जहर का काट भी है। चलो, एक सौदा कर लेते हैं! तुम मुझे श्वेता के बदन पर कसे बम छल्लों को उतारने का तरीका बताओ, और मुझसे इस जहर का काट लेकर पी लो!
आईऽऽऽ बड़ी तेज जलन हो रही है। अरे! वह कोई बम-वम नहीं है। सिर्फ मैकेनिज्म वाले छल्ले हैं। उनमें कोई विस्फोटक नहीं भरा है! आरी से काटकर उतार लो!

देखा, चंडिका! अगर मैं यह चाल नहीं चलता तो इससे यह पता करने में बहुत मुश्किल होती! अपनी जान का डर हुआ, तो तुरन्त सब बक दिया!...
...वैसे मैं यह काम यहां पहुंचते ही कर सकता था! पर उस समय इसके आदमी बन्दूकें ताने खड़े थे! खैर! अगर उस छल्ले में बम नहीं है तो इस फ्रेम में भी जहर नहीं है!...
?
हैं? नहीं है? आऽऽऽह!
हां! इस पर एक जंगली फल के रस का लेप है, जो खाल के संपर्क में आते ही बदन में एलर्जी पैदा कर देता है, और तेज जलन होने लगती है!
पर घबरा मत! आधे घंटे के अंदर तू पागलखाने में पहुंच जाएगा!
और उतनी ही देर में ये एलर्जी भी खत्म हो जाएगी!
और फिर- अस्पताल में-
बड़ी मुश्किल से तुमसे अकेले में मिलने की इजाजत मिली है श्वेता! मैं यह नहीं चाहती थी कि तुमको असलियत बताए बग़ैर मैं उड़न छू हो जाऊं!
सर्र्र्र
अरे, जल्दी बताओ कि तुम हो कौन? मैं खुद सस्पेंस के मारे मरी जा रही हूं कि आखिर मेरा रोल कर कौन रहा है?

ये मैं हूं, श्वेता!
नताशा!
ओ नताशा! थैंक गॉड, ये तुम हो! अब चिन्ता की कोई बात नहीं है। क्योंकि तुम इकलौती ऐसी शख्स हो जो मेरा रहस्य पहले से जानती हो!
पर तुम नताशा से चंडिका बनी कैसे?
बनना तो नहीं चाहिए श्वेता। पर तुम मेरी बेस्ट फ्रेंड हो। दरअसल मेरे डैड के आदमी हारून शाह और विदूषक के बीच में पहले से ही लड़ाई चल रही थी!
पहले मुझे पता नहीं था कि ये कुत्ता डॉग किसका है। पर विदूषक के आने की खबर सुनते ही मैं समझ गई कि वह विदूषक कहां गया है। मैं विदूषक के बारे में जानती थी। इसीलिये जब बोट पर पेंटिंग की डील होने वाली थी तो मैं दूर एक स्टीमर में बाइनोक्यूलर द्वारा सारे घटनाक्रम पर नजर रखे हुए थी। क्योंकि मुझे अंदाजा था कि विदूषक इस डील में अड़ंगा जरूर डालेगा। तुमको वहां देख कर मैं चौंक उठी! पर मुझे भरोसा था कि मेरे आदमी स्थिति संभाल लेंगे। पर वे ऐसा नहीं कर पाए। और जब तक मैं वहां पर पहुंचने की सोचती, तब तक ध्रुव वहां पर पहुंच गया!
अब तो वहां पर नताशा के जाने का सवाल ही नहीं था। पर जब विदूषक तुमको पिंजरे में कैद करके भागा तो मैंने एक तीर से दो शिकार करने की सोची। मैं जानती थी कि तुम ही चंडिका हो। और जब मैं चुपचाप बोट पर पहुंची तो मुझे तुम्हारा 'पर्स' एक केबिन के फर्श पर गिरा हुआ मिल गया। बस मैं चंडिका बन गई। मैं चंडिका के रूप में ध्रुव के सामने पहुंच गई। और उसी के हाथों अपने दुश्मन विदूषक को पकड़वाने पहुंचा दिया!...
...और मेरा रहस्य भी बचा रह गया! पर नताशा... तुम अपराध की दुनिया छोड़कर वापस हमारी दुनिया में क्यों नहीं आ जाती?
ओह, देखेंगे श्वेता, अभी तो मैं चंडिका की ड्रेस साथ ले जा रही हूं। कल वापस भेज दूंगी। बाय!

Vinod Yadav